



पाठ-चार

ध्वनि-प्रदूषण और हमारा जीवन

आधुनिक, सभ्यता, प्रदूषण, ध्वनि, कर्कश, आनन्द, नुकसान, कड़कड़ाहट, पहिया, शोर, मस्तिष्क, चिड़चिड़ा, रगड़ना।

आधुनिक सभ्यता प्रदूषण से परेशान है। प्रदूषण कई प्रकार का होता है। उन्हीं में से एक है, ध्वनि-प्रदूषण। मोटर-कारों, बसों, रेलगाड़ियों, हवाई-जहाजों आदि की भारी तथा कर्कश आवाज से ध्वनि-प्रदूषण होता है। कारखानों में लगी बड़ी-बड़ी मशीनें भी ध्वनि-प्रदूषण का कारण बनती है।

कोमल और धीमी ध्वनि सुनने में सभी को आनन्द आता है। हर कोई मधुर ध्वनि सुनना चाहता है। शोर और कोलाहल कोई पसन्द नहीं करता। शोर हमारे कानों को भारी नुकसान पहुँचाता है। इंजिन की साँय-साँय, बिजली कड़कड़ाहट, मोटर-कार के ब्रेक लगाने से पहियों के जमीन पर रगड़ने से उत्पन्न कर्कश आवाज हमारे कानों को अप्रिय लगती है।



आज सारे विश्व में शहरी जीवन ध्वनि-प्रदूषण से घिरा है। शहरों से गाँवों तक पेट्रोल वाली गाड़ियाँ तथा डीजल और बिजली वाली ट्रेनें चलती रहती हैं। दिन-रात आकाश हवाई-जहाजों की उड़ान की आवाज से भरा रहता है। शहरों के बाजारों में शोर ही शोर होता है। इससे हमारे जीवन को काफी हानि होती है। शहरों में स्थान-स्थान पर तीव्र आवाज में लाउड स्पीकर बजते रहते हैं। इससे कई लोगों के कान खराब हो जाते हैं।

ध्वनि-प्रदूषण से हमारे कान ही खराब नहीं होते, बल्कि मस्तिष्क पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। ध्वनि-प्रदूषण सोचने-समझने और अध्ययन करने की क्षमता को भी नुकसान पहुँचाता है। यह हमारे सामान्य व्यवहार को भी प्रभावित करता है। ध्वनि-प्रदूषण के शिकार लोग चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं।

ध्वनि-प्रदूषण की हानियों को देखते हुए हमें इससे बचने का उपाय करना चाहिए। रेडियो या टी.वी. कभी ऊँची आवाज में नहीं बजाना चाहिए। मोटर गाड़ियों में ध्वनि-नियन्त्रक यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। इतना ही नहीं, ऊँची आवाज में बोलने से भी बचना चाहिए।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

सभ्यता	=	सिविलाइजेशन, शिष्टता।
प्रदूषण	=	दोषयुक्त होने की स्थिति या भाव।
ध्वनि	=	आवाज, शब्द।
कर्कश	=	कठोर, तीव्र।
व्यवहार	=	कार्य, आचरण, बर्ताव।
आनन्द	=	खुशी, हर्ष।
नुकसान	=	हानि, क्षति।
कड़कड़ाहट	=	कड़ी चीज टूटने या गिरने की आवाज।
चिड़चिड़ा होना	=	झुँझलाना, तुनक-मिजाज होना।
2. उत्तर दीजिए :
 - (क) आधुनिक सभ्यता किससे परेशान है ?
 - (ख) किससे ध्वनि-प्रदूषण होता है ?
 - (ग) हमारे कानों को क्या अप्रिय लगता है ?
 - (घ) किन कारणों से हमारे कान खराब हो जाते हैं ?

- (ड) ध्वनि-प्रदूषण से क्या-क्या नुकसान होते हैं ?
- (च) ध्वनि-प्रदूषण से बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए ?
- (छ) किन-किन क्षेत्रों में प्रदूषण होता है ?
- (ज) विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से मानव-जीवन में क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं ?
- (झ) विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को कैसे नियन्त्रित किया जा सकता है ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

आधुनिक -----
 प्रदूषण -----
 कर्कश -----
 कोलाहल -----
 अप्रिय -----
 तकलीफ -----
 मस्तिष्क -----
 नुकसान -----
 प्रभावित -----
 समाप्त -----

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) आधुनिक सभ्यता प्रदूषण से परेशान है। ☐
- (ख) कोमल और धीमी ध्वनि सुनने में सभी को आनन्द नहीं आता है। ☐
- (ग) शोर हमारे कानों को भारी नुकसान पहुँचाता है। ☐
- (घ) आज शहरी जीवन ध्वनि-प्रदूषण से घिरा है। ☐
- (ङ) ध्वनि-प्रदूषण से केवल हमारे कान ही खराब होते हैं। ☐

5. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड “क” तथा “ख” के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
शोर और कोलाहल बाजारों के शोर से लाउड स्पीकर से ध्वनि-प्रदूषण के शिकार लोग	हमारे जीवन को काफी हानि होती है। कई लोगों के कान खराब हो जाते हैं। चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं। कोई पसन्द नहीं करता।

6. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और “चाहना” तथा “चाहिए” के प्रयोग-अन्तर और अर्थ-भेद को समझिए :

मैं रोटी खाना चाहता हूँ।	मुझे रोटी खानी चाहिए।
वह सोना चाहता है।	उसे सोना चाहिए।
हम प्रेम-भाव से रहना चाहते हैं।	हमें प्रेम-भाव से रहना चाहिए।
तुम यह चित्र देखना चाहते हो।	तुम्हें यह चित्र देखना चाहिए।
आप नहीं आना चाहते हैं।	आपको नहीं आना चाहिए।
हम ऊँची आवाज में नहीं बोलना चाहते हैं।	हमें ऊँची आवाज में नहीं बोलना चाहिए।

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

प्रस्तुत पाठ में तीन ऐसे शब्द हैं, जो संस्कृत से लिए गए हैं, परन्तु थोड़े परिवर्तन के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे – कान, गाँव, रात।

ऐसे शब्दों को तद्भव कहा जाता है। कुछ तद्भव शब्द इस प्रकार हैं –

अचरच, अजान, अन्धा, आग, आम, आँसू, आठ, ईख, ओठ, कपुर, काग, घड़ा, घर, घोड़ा, चाम, छाता, जीभ, थल, दही, दाँत, दूध, नंगा, नैन, पैर, बहू, बात, मोर, मुँह, माँ, साँप, हाथ, हाथी आदि।